CulturalSamvaad.com

श्रीमद्भगवद्गीता के महत्वपूर्ण सन्देश

Gems from the Bhagavad Gita

© Cultural Samvaad. All rights reserved.

About 'Gems from the Bhagavad Gita'

The Bhagavad Gita is an infinite ocean of wisdom. However, this incomprehensible vastness is not daunting but beckons and gently nudges one to take a dip in its sublime waters. Every time one takes a dip in this ocean, there are exquisite gems galore for the taking. Team Cultural Samvaad has curated a handful of those gems that have become a part of our daily discourse. We hope that you find this collection

About Cultural Samvaad

Cultural Samvaad is a platform to understand, appreciate and discuss the multi-hued fabric of India's rich and plural culture, her vast heritage, her infinite wisdom and her indomitable spirit. It is owned and managed by Hiranya Growth Partners LLP, a boutique consulting and strategic content firm.

Producer: Hiranya Growth Partners LLP
Editor: Garima Chaudhry

editor@culturalsamvaad.com +91 79864 15731

Follow Us

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

श्रीमद्भगवद्गीता 2.22

जैसे मनुष्य पुराने जीर्ण वस्त्रों को त्याग कर,
नवीन वस्त्रों को ग्रहण करते हैं, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों
को छोड़कर नवीन शरीरों को प्राप्त करती है।

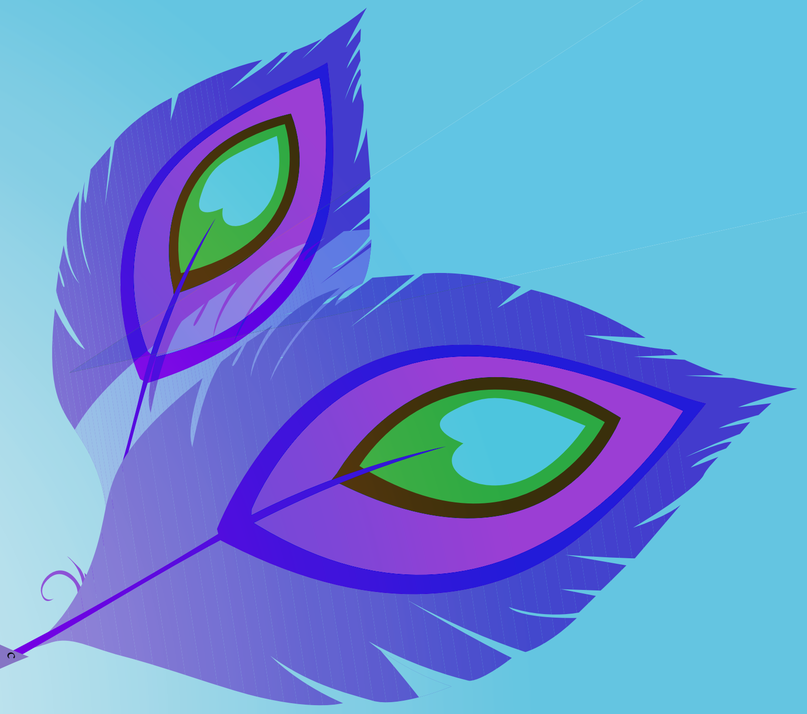

Just as human beings shed their old and worn-out clothes and don new attire, the atma (loosely referred to as soul) sheds old and worn-out bodies to don new bodies.

Srimad Bhagavad Gita 2.22

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

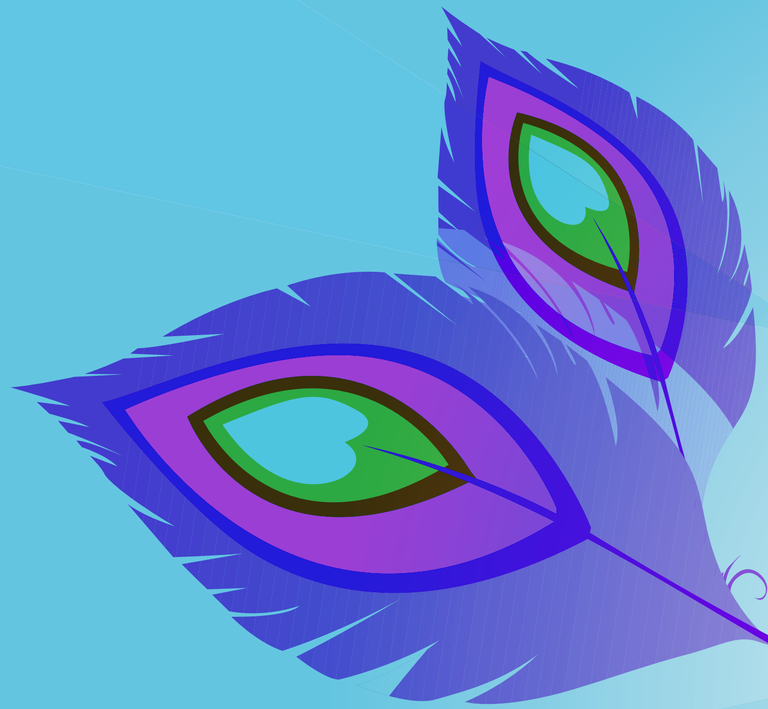

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

श्रीमद्भगवद्गीता 2.23

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते हैं और अग्नि इसे जला नहीं सकती है | जल इसे गीला नहीं कर सकता है और वायु इसे सुखा नहीं सकती है ।।

Lord Krishna expounds the nature of the atma and tells Arjuna that the atma cannot be shattered by weapons, it cannot be burnt by fires, it cannot be drenched by water and it cannot be rendered dry by winds.

Srimad Bhagavad Gita 2.23

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

श्रीमद्भगवद्गीता 2.47

तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करना ही है|
कर्मों के फल पर तुम्हारा अधिकार नहीं है|
तुम निरन्तर कर्म के फल पर मनन मत करो
और अकर्मण्य भी मत बनो|

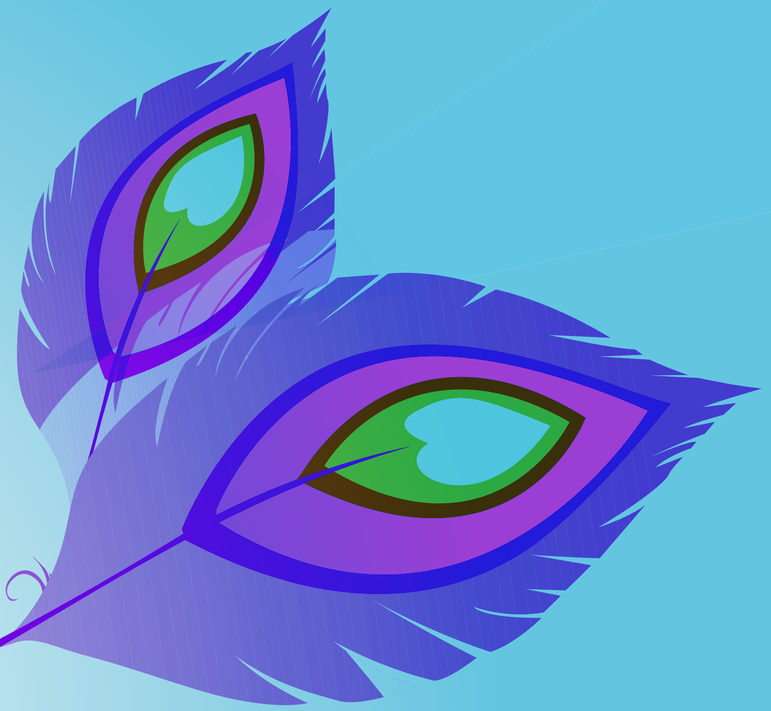

You only have the right to perform actions (karma). You do not have the right to the fruits of your karma. Do not become a person who constantly meditates upon (gets attached to) the results of one's karma. Do not get attached to inactivity (no karma).

Srimad Bhagavad Gita 2.47

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

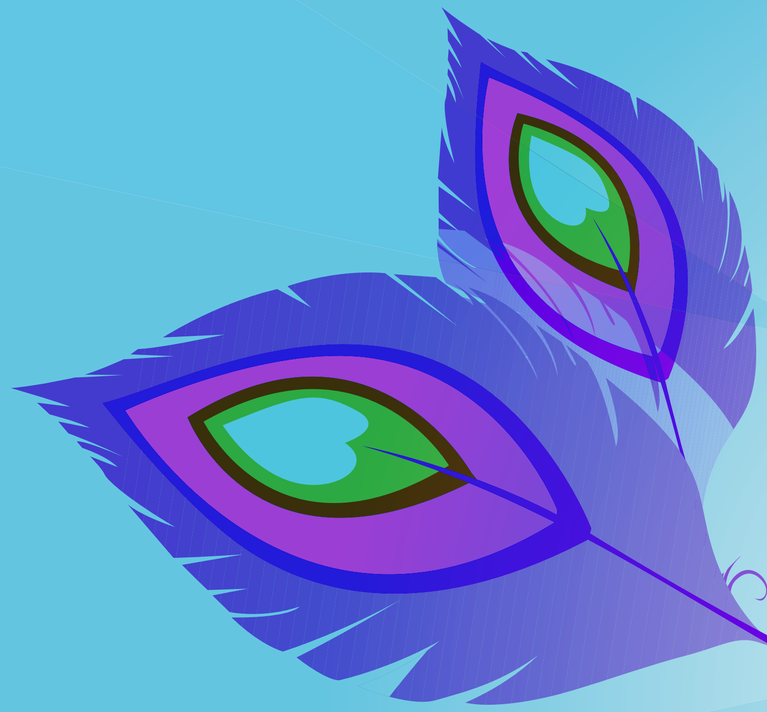

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

श्रीमद्भगवद्गीता 4.7 & 4.8

जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है,
तब-तब मैं प्रकट होता हूँ (अवतरित होता हूँ) ।
साधुजनों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और
धर्म की स्थापना करने के लिए, मैं हर युग में प्रकट होता हूँ|

Whenever Dharma starts fading into oblivion and Adharma increases, I manifest myself (the formless assumes form - an avataar of the Supreme takes birth).

I take birth in every age to protect the virtuous, to annihilate the evil-doers and to establish (and re-establish) Dharma.

Srimad Bhagavad Gita 4.7 & 4.8

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

श्रीमद्भगवद्गीता 16.21

काम, क्रोध और लोभ, नरक के त्रिविध द्वार हैं| भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि आत्मा का नाश करने वाली इन तीनों आसुरी प्रवृत्तियों को त्याग देना चाहिए।

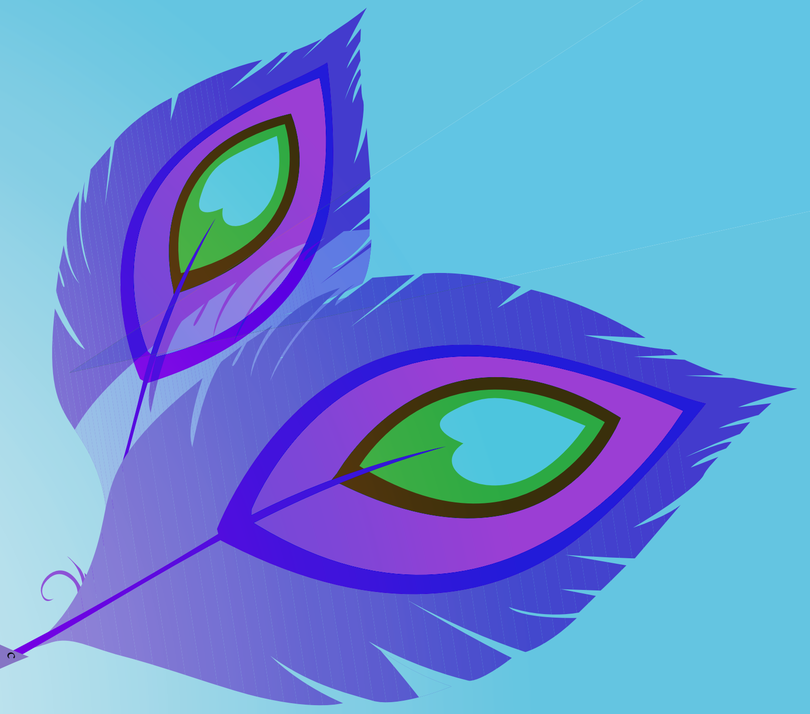

Lust, anger and greed are the three gateways to hell. Lord Krishna exhorts human beings to renounce these three demonic tendencies as they lead to the destruction of the atma (loosely translated as soul or self).

Srimad Bhagavad Gita 16.21

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

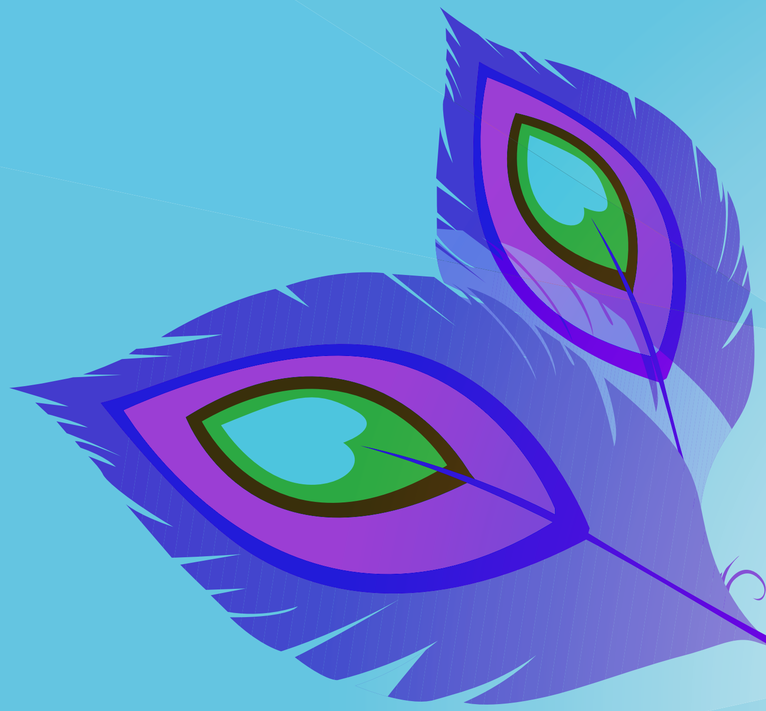

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 12.15

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिससे लोक (एवं समस्त जीव) संतप्त या क्षुब्ध नहीं होता, जो स्वयं भी लोक से उद्वेग का अनुभव नहीं करता तथा जो हर्ष, अमर्ष (असहिष्णुता), भय और अन्य उद्वेगों से मुक्त होता है, वह भक्त मुझे प्रिय है।

Lord Krishna states that the person (the karma yogi) by whom the world (and all beings) is not disturbed; who is not disturbed or agitated by the world; who is free from joy, impatience, intolerance, fear and anxiety is dear to him.

Srimad Bhagavad Gita 12.15

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

श्रीमद्भगवद्गीता 6.17

योग तब दुःखनाशक (समस्त बंधनों से मुक्त करने वाला) होता है, जब योगी संतुलित एवं नियमित आहार और विहार करने वाला होता है, यथायोग्य चेष्टा करने वाला होता है और परिमित शयन और जागरण करने वाला होता है।

That yoga which destroys all sorrows (removes all bondages) is successfully practised by the one who is temperate in eating and moderate in movements and recreation, temperate in exertion, and temperate in sleep and wakefulness.

Srimad Bhagavad Gita 6.17

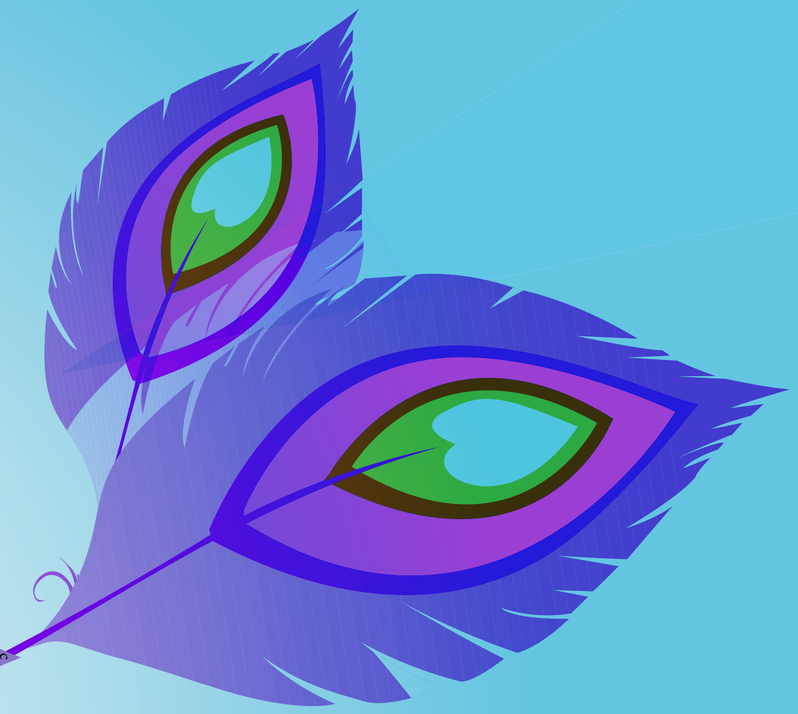

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

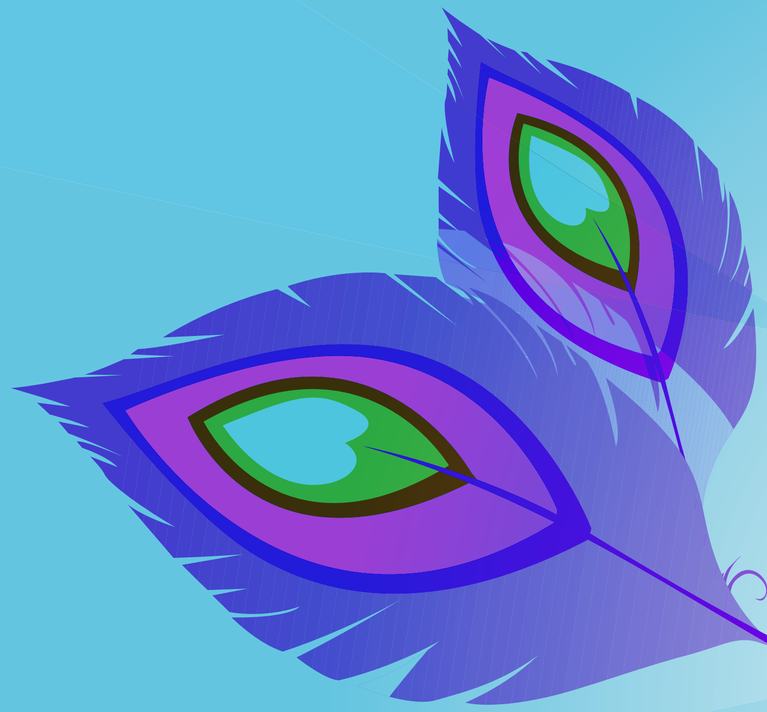

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 9.26

श्रीकृष्ण कहते हैं कि भक्त यथासाध्य प्राप्त पत्र (पत्ता), पुष्प, फल, जल, आदि जो भी प्रेमपूर्वक एवं शुद्ध मन से भगवान को अर्पण करता है, वह (अर्पित की गयी भेंट) भगवान सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं (खा लेते हैं)।

Shri Krishna avers that when a devotee offers a leaf, a flower, a fruit or a little water (whatever is accessible to her or him) with love and a pure mind; Bhagwaan (God) accepts the offering happily.

Srimad Bhagavad Gita 9.26

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।।

श्रीमद्भगवद्गीता 11.18

आप ही जानने योग्य परम अक्षर ब्रह्म हैं| आप ही इस सम्पूर्ण विश्व के परम आश्रय हैं| आप ही सनातन धर्म के रक्षक हैं और आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं| ऐसा मेरा मत है।

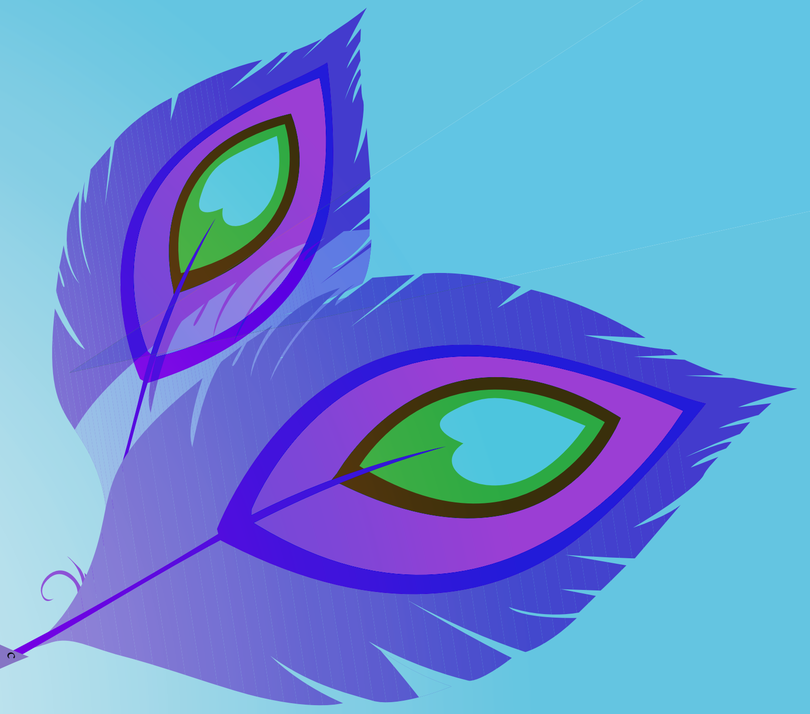

You are the immutable, supreme (being) to be known. You are the ultimate abode (place of rest) for this universe. You are the imperishable protector of the eternal dharma. You are the eternal soul. This is my belief.

Srimad Bhagavad Gita 11.18

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

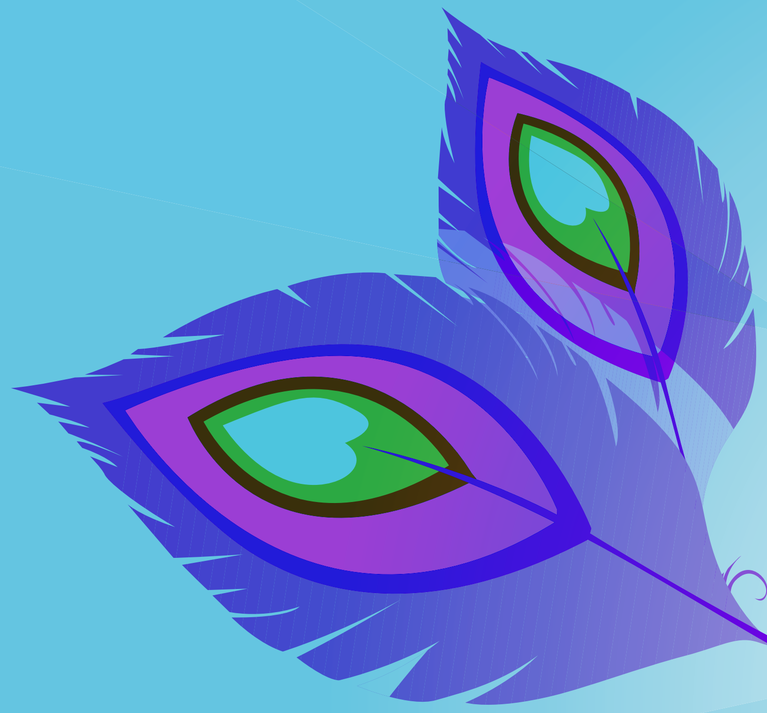

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 18.66

सब धर्मों का परित्याग कर, तुम मेरी ही शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा। तुम शोक मत करो।

Abandon all dharmas and take refuge in me alone. I will liberate you from all sins and evil. Do not grieve.

Srimad Bhagavad Gita 18.66

Cultural संवाद | CulturalSamvaad.com

www.hiranyagrowthpartners.com

CulturalSamvaad.com

Follow Us:

First Edition. December 2021.

© Cultural Samvaad. All rights reserved.